अध्याय 1

बुरी खबर के प्रति नहेम्याह का प्रत्युत्तर

नहेम्याह का प्रथम अध्याय, अध्याय 7 तक घटने वाली घटनाओं के लिए मंच तैयार करता है। जब नहेम्याह शूशन में रहकर फारस के राजा की सेवा किया करता था तो वह यह सुनकर अति खेदित हुआ कि यरूशलेम की शहरपनाह ढा दी गई है, जिससे इस नगर में रहने वाले लोग रक्षाहीन हो गए हैं। उसने विलाप करके प्रार्थना किया; और जैसा अगला अध्याय बताता है, उसने इस समस्या का समाधान करने के लिए कुछ करने की ठानी।

प्रस्तावना (1:1)

[1]हकल्याह के पुत्र नहेम्याह के वचन। बीसवें वर्ष के किसलेव नामक महीने में, जब मैं शूशन नामक राजगढ़ में रहता था।

नहेम्याह ने अपना साहित्यिक कार्य अपना परिचय देकर आरंभ किया।

आयत 1. प्राचीन परंपरा के अनुसार चाहे एज्रा और नहेम्याह एक संयुक्त पुस्तक हो या न हो, **नहेम्याह के वचन** जैसा वाक्यांश एक भिन्न रचना का शीर्षक ठहरता है (देखें यिर्म. 1:1; आमोस 1:1)। यह वाक्यांश नहेम्याह का प्रथम पुरूष व्याख्या को संबोधित करने के लिए प्रयोग किया गया है (विशेषकर 1:1-7:5) या फिर पूरी पुस्तक के लिए किया गया है। इब्रानी बाइबल में "नहेम्याह" सामान्य नाम है जो परमेश्वर से शांति की विचारधारा को संपादित करता है।

नहेम्याह, **हकल्याह के पुत्र** थे। "हकल्याह" का अर्थ "'यहोवा के लिए प्रतीक्षा' है,"[1] और पुराने नियम में यह केवल यहीं और 10:1, 2 में पाया जाता है। नहेम्याह की पहचान दाऊद की संतान या लेवी के रूप में नहीं किया गया है। यह संभावना जताया जाता है कि वह जरूबाब्बेल के समान राजकीय खानदान से संबंधित नहीं था और न ही एज्रा के समान याजक या शास्त्री था।[2]

यहूदा से बुरी खबर (1:1-3)

[1]हकल्याह के पुत्र नहेम्याह के वचन। बीसवें वर्ष के किसलेव नामक महीने में, जब मैं शूशन नामक राजगढ़ में रहता था, [2]तब हनानी नामक मेरा एक भाई और यहूदा से आए हुए कई एक पुरुष आए; तब मैं ने उन से उन बचे हुए यहूदियों के विषय जो बँधुआई से छूट गए थे, और यरूशलेम के विषय में पूछा। [3]उन्होंने मुझ से कहा, "जो बचे हुए लोग बँधुआई से छूटकर उस प्रान्त में रहते हैं, वे बड़ी दुर्दशा में पड़े हैं, और उनकी निन्दा होती है; क्योंकि यरूशलेम की शहरपनाह टूटी हुई, और उसके फाटक जले हुए हैं।"

इस पुस्तक के इस भाग में जो घटना अवक्षेपित है वह शूशन में कुछ लोगों के आने से उत्पन्न हुआ है।[3] वे लोग यहूदा से एक विचलित करने वाली खबर लाए थे।

आयत 1. नहेम्याह का वृतांत यह व्याख्या करते हुए आरंभ होता है कि पहला मुठभेड़ कब और कहाँ हुआ था। समय **बीसवां वर्ष** है, संभवतः अर्तक्षत्र प्रथम के शासन या 445 ई.पू. में घटित हुआ होगा। यह **किसलेव के महीने** में हुआ था, जो नवम्बर और दिसम्बर के महीने में पड़ता है। **शूशन** नामक स्थान की पहचान **राजगढ़** के रूप में की गई है। इब्रानी शब्द "राजगढ़" (בִּירָה, *बीराह*) का अक्षरशः अनुवाद "राजमहल" ["palace"; (KJV)], "किला" ["fortress"; (NJPSV)], या "गढ़" ["citadel"; (NIV)] हो सकता है। "शूशन" जो "इससे पहले एलाम सम्राज्य का राजधानी था, को दारा प्रथम ने फारस साम्राज्य का मुख्य राजनिवास और प्रशासनिक राजधानी बनाया था, जबकि एक्बाताना ग्रीष्मकालीन राजनिवास था।"[4]

आयतें 2, 3. तब यहूदा से **हनानी नामक मेरा** [नहेम्याह का] **एक भाई**, और कुछ अन्य यहूदी लोग शूशन नामक राजगढ़ में आए। संभवतः हनानी, नहेम्याह का स्वदेशी यहूदी नहीं था बल्कि वह उसका सगा भाई था। उसको "एक सच्चा पुरुष" और "परमेश्वर का भय मानने वाला" कहकर संबोधित किया गया है (7:2)। चूँकि हनानी बड़ी जिम्मेदारी लेने की क्षमता रखता था तो उसको कालांतर में "यरूशलेम का अधिकारी ठहराया" गया (7:2)। संभवतः हनानी और अन्य लोग यहूदियों के आधिकारिक प्रतिनिधि थे जो शूशन नामक राजगढ़ में यहूदा की स्थिति का विवरण देने के लिए भेजे गए थे।

नहेम्याह ने इस दल से यहूदा में बंधुआई से बचे हुए **यहूदियों** का हाल चाल जाना। उन्होंने उसको बताया कि जो लोग बंधुआई से छूटकर उस प्रांत में रहते थे, वे **बड़ी दुर्दशा में पड़े हैं, और उनकी निन्दा होती है।** उनकी "दुर्दशा" और "निन्दा" का कारण नहीं बताया गया है। हो सकता है कि उस **प्रांत** में रहने वाले यहूदी लोग, अपने पापों के परिणामस्वरूप "बड़ी गरीबी" (देखें हाग्गै 1:5, 6; मलाकी 3:6-12) और फारस की सरकार द्वारा लगाया गया अधिकतम चुँगी का सामना कर रहे थे।[5]

दल ने यह भी बताया, "**यरूशलेम की शहरपनाह टूटी हुई, और उसके फाटक**

जले हुए हैं।" यह अनुच्छेद यह विश्लेषण नहीं करता है कि "शहरपनाह कब टूटा" या "फाटक क्यों जलाए" गए। क्या दल 140 वर्ष पहले नबूकदनेस्सर द्वारा नष्ट किए गए यहूदा की दशा का विवरण दे रहे थे? क्या वे इससे बाद की आधुनिक घटना के बारे में कह रहे थे?1 जैसे कोई आपदा जिसके बारे में एज्रा 4:7-23 में वर्णन किया गया है, जिसमें यहूदी लोगों के शत्रुओं द्वारा अर्तक्षत्र को लिखा चिट्ठी सम्मिलित है। वे यरूशलेम के चारों ओर यहूदी लोगों द्वारा शहरपनाह बनाने का विरोध कर रहे थे। अर्तक्षत्र ने उनके विनती सुना और जिसका परिणाम यह निकला कि देश के लोगों ने "उतावली करके यरूशलेम के यहूदियों के पास गए और बलपूर्वक उनको रोक दिया" (एज्रा 4:23)। उन्होंने हस्तक्षेप करके अधूरे निर्मित शहरपनाह को गिरा दिया होगा और यदि यहूदी लोगों ने किसी फाटक को बनाया होगा तो उनको भी जला दिया होगा। किसी भी मामले में, शहरपनाह की दशा ने यहूदियों को उनके शत्रुओं से रक्षाहीन छोड़ा होगा। बाद में यह पुस्तक यह प्रमाण प्रस्तुत करता है कि यहूदियों के बहुत सारे शत्रु थे।

नहेम्याह की प्रतिक्रिया और प्रार्थना (1:4-11)

**4ये बातें सुनते ही मैं बैठकर रोने लगा और कितने दिन तक विलाप करता,
और स्वर्ग के परमेश्वर के सम्मुख उपवास करता और यह कहकर प्रार्थना करता
रहा। 5"हे स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा, हे महान् और भययोग्य ईश्वर! तू जो अपने
प्रेम रखनेवाले और आज्ञा माननेवाले के विषय अपनी वाचा पालता और उन
पर करुणा करता है; 6तू कान लगाए और आँखें खोले रह, कि जो प्रार्थना मैं तेरा
दास इस समय तेरे दास इस्राएलियों के लिये दिन रात करता रहता हूँ, उसे तू
सुन ले। मैं इस्राएलियों के पापों को जो हम लोगों ने तेरे विरुद्ध किए हैं, मान
लेता हूँ। मैं और मेरे पिता के घराने दोनों ने पाप किया है। 7हम ने तेरे सामने
बहुत बुराई की है, और जो आज्ञाएँ, विधियाँ और नियम तू ने अपने दास मूसा
को दिए थे, उनको हम ने नहीं माना। 8उस वचन की सुधि ले, जो तू ने अपने
दास मूसा से कहा था, 'यदि तुम लोग विश्वासघात करो, तो मैं तुम को देश देश
के लोगों में तितर बितर करूँगा। 9परन्तु यदि तुम मेरी ओर फिरो, और मेरी
आज्ञाएँ मानो, और उन पर चलो, तो चाहे तुम में से निकाले हुए लोग आकाश
की छोर में भी हों, तौभी मैं उनको वहाँ से इकट्ठा करके उस स्थान में पहुँचाऊँगा,
जिसे मैं ने अपने नाम के निवास के लिये चुन लिया है।' 10अब वे तेरे दास और
तेरी प्रजा के लोग हैं जिनको तू ने अपनी बड़ी सामर्थ और बलवन्त हाथ के द्वारा
छुड़ा लिया है। 11हे प्रभु विनती यह है, कि तू अपने दास की प्रार्थना पर, और
अपने उन दासों की प्रार्थना पर, जो तेरे नाम का भय मानना चाहते हैं, कान
लगा, और आज अपने दास का काम सफल कर, और उस पुरुष को उस पर
दयालु कर।" (मैं तो राजा का पियाऊ था।)**

आयत 4. जब (नहेम्याह) ने यरूशलेम की परिस्थिति के बारे में **सुना**, तो उसके प्रति उसकी त्वरित प्रतिक्रिया वैसे ही थी जैसे कोई मरे हुए के लिए विलाप करता हो। उसने विलाप और दुःख मनाना, **उपवास और प्रार्थना** जारी रखा। उसके दुःख की तुलना एज्रा की उस प्रतिक्रिया से की जा सकती है कि जब उसने सुना था कि यहूदी लोगों ने विदेशियों की पुत्रियों से विवाह करके पाप किया था (एज्रा 9:1-3; 10:1)।

नहेम्याह **रोने लगा और कितने दिनों तक विलाप करता रहा**, एक या दो घण्टे के लिए नहीं बल्कि **कई दिनों** तक वह ऐसा ही करता रहा। स्पष्ट रूप से नहेम्याह लगभग चार महीने तक रोता और प्रार्थना करता रहा। किसलेव के महीने में नहेम्याह को यरूशलेम का समाचार मिला था, जो नौवां महीना था; और नीशान के महीने में वह राजा के सम्मुख उपस्थित हुआ था (2:1), जो पहला महीना था, या समाचार मिलने के चार महीने पश्चात।

नहेम्याह की प्रतिक्रिया मनुष्यों द्वारा नहीं देखी जानी चाहिए थी; वह अपना दुःख **स्वर्ग के परमेश्वर -** एकमात्र सच्चा परमेश्वर के सम्मुख व्यक्त कर रहा था। परमेश्वर के लोगों के प्रति नहेम्याह की प्रामाणिकता पर संदेह नहीं किया जा सकता है।

आयत 5. नहेम्याह 1:5-11 की प्रार्थना में, नहेम्याह ने कई तत्वों का समावेश किया है। (1) उसने परमेश्वर की महानता और भलाई को स्वीकार करते हुए उसे संबोधित किया है (1:5)। (2) उसने परमेश्वर से उसके "दास" की प्रार्थना सुनने की विनती की (1:6) और तब (3) उसने पापों से पश्चाताप किया (1:6, 7)। (4) उसने यह विनती की कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा को "स्मरण" करे (1:8-10) और (5) जब वह राजा के सम्मुख उपस्थित होवे तो वह उसको सफलता प्रदान करे (1:11)।

देखा जाए तो यह प्रार्थना *परमेश्वर को संबोधित करते हुए आरंभ होती है।* नहेम्याह **स्वर्ग के परमेश्वर** (यहोवा), जो महान परमेश्वर है, जिसने अपनी पहचान "प्रभु" करके दी है, से प्रार्थना कर रहा था। उसने परमेश्वर का वर्णन **"महान और भययोग्य"** किया है। कोई भी उसके तुल्य नहीं है; जो कुछ अस्तित्व में है केवल वही उसका सृष्टिकर्ता है। परमेश्वर केवल महान ही नहीं है बल्कि; वह भला भी है। यह वही है जो **आज्ञा माननेवाले के विषय अपनी वाचा पालता और उन पर करुणा करता है**। "करुणा" इब्रानी शब्द חֶסֶד (*हेसेद*) का अनुवाद है, जो परमेश्वर को वाचा बांधने वाला दर्शाता है, जो उन लोगों पर प्रकट होता है जो उसके साथ वाचा के बंधनों में बंधते हैं। वह करुणा और दया सब लोगों पर प्रकट करता है, लेकिन विशेषकर उन लोगों पर **जो उससे प्रेम करते हैं और उसकी आज्ञा को मानते हैं**। सदैव परमेश्वर ने सब मानवजाति पर प्रेम दिखाया है, लेकिन जो उसकी इच्छा पूरी करते हैं उन पर वह विशेष कृपादृष्टि करता है।

आयतें 6, 7. आगे नहेम्याह ने उसके निवेदन सुने जाने के लिए विनती की। उसने इस प्रकार प्रार्थना की "**तू कान लगाए और आँखें खोले रह, कि जो प्रार्थना मैं तेरा दास इस समय तेरे दास इस्राएलियों के लिये दिन रात करता रहता हूँ,**

उसे तू सुन ले।" परमेश्वर के "कान" और "आँखों" का संदर्भ उसका मानवीय अभिव्यक्ति है - अर्थात् वे परमेश्वर के मनुष्य में लक्षण दर्शाते हैं। परमेश्वर, आत्मा है (यूहन्ना 4:24), उसकी वास्तविक "आँखें" और "कान" नहीं हैं, लेकिन परमेश्वर के गुणों को समझने के लिए हमें उसको केवल मानवीय शब्दावली में ही समझना आरंभ करना होगा।

नहेम्याह की विनती तीन तथ्यों पर आधारित हैः वह परमेश्वर का **दास** था, वह निरंतर (**दिन और रात**) प्रार्थना कर रहा था, और वह परमेश्वर के दास **इस्राएल की ओर से** प्रार्थना कर रहा था। ये तथ्य यह सुझाव प्रस्तुत करते हैं कि परमेश्वर को उसकी प्रार्थना सुनना चाहिए और उसे उसका प्रत्युत्तर देना चाहिए।

जैसे ही नहेम्याह ने परमेश्वर की कृपा मांगी, वह *पापों का अंगीकार करने* लगा। वह घमण्डी होकर परमेश्वर के सिंहासन के निकट नहीं आया, कि परमेश्वर उसकी मांग पूरी करे और उसकी विनती माने। बल्कि, उसने परमेश्वर से नम्र होकर ऐसा बोला, मानो वह परमेश्वर के आशिषों को पाने के योग्य न हो और मानो वह अयोग्य लोगों का प्रतिनिधि हो। उसने अंगीकार किया कि **इस्राएल का घराना** - सम्पूर्ण परमेश्वर के लोगों - ने परमेश्वर के विरुद्ध **पाप किया है।** उसने यह भी अंगीकार किया कि उसने व्यक्तिगत रूप से और उसके **घराने** ने **पाप किया** है। यह अंगीकार करते हुए उसने इस बात का विस्तार किया कि यहूदियों के पापों में **आज्ञाएं** और **विधियाँ** और **नियम**, जिनको परमेश्वर ने लोगों को **मूसा** के द्वारा दिया था, नहीं मानना सम्मिलित है। एज्रा और मलाकी भविष्यवक्ता के समान, नहेम्याह ने माना कि यहूदी लोग व्यवस्था मानने के लिए बाध्य हैं; लेकिन उसने यह माना कि उन्होंने ऐसा नहीं किया।

नहेम्याह के मन में कौन सी आज्ञा न मानने की बात रही होगी? संभवतः उसके मन में उन पापों का संदर्भ रहा होगा जिसके कारण परमेश्वर को देश को नाश करना पड़ा था और यहूदियों को बंधुआई में भेजना पड़ा था। इस बात की अधिक संभावना है कि उसने यहूदा की वर्तमान "दुर्दशा" (1:3) को यहूदियों के पाप के कारण परमेश्वर की अप्रसन्नता को चिह्न के रूप में समझा। इस्राएलियों को जिन पापों से पश्चाताप करना था उनको स्मरण करने में नहेम्याह को कोई कठिनाई नहीं हुई होगी।

आयतें 8-10. नहेम्याह के प्रार्थना का केंद्र यह था कि उसने यह *विनती किया कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं की सुधि ले।* वह यह चाहता था कि जो प्रतिज्ञाएं परमेश्वर ने और **मूसा** के द्वारा दी है, वह उसकी **सुधि ले**। उसने परमेश्वर को स्मरण दिलाया कि उसने, विशेषकर व्यवस्थाविवरण में, क्या प्रकट किया है। यदि इस्राएली लोग परमेश्वर की व्यवस्था तोड़ते हैं तो वह उन्हें बंधुआई में जाने देगा और उनको **देश देश के लोगों में तितर बितर करेगा** (1:8; देखें व्यव. 4:25-27)। यदि वे अपने पापों से पश्चाताप करके परमेश्वर के पास लौट आते हैं तो वह उनको उनके देश में लौटा ले आएगा - उस स्थान में **पहुँचाएगा, जिसे उसने अपने नाम के निवास के लिये चुन लिया है** (1:9; देखें व्यव. 12:5)। यह परमेश्वर की प्रतिज्ञा थी, चाहे उसके लोग कितनी दूर ही क्यों न भगाए जाएं। नहेम्याह ने यह भी जोड़ा

कि परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा के इस द्वितीय भाग को थामे रखा है: उसने अपने **दासों** और अपनी **प्रजा के लोगों** को अपनी **बड़ी सामर्थ और बलवन्त हाथ के द्वारा छुड़ा लिया है** (1:10; देखें व्यव. 30:1-5)। उसने उन्हें मिस्र की दासता से निकाला; और उसके पश्चात अब उसने उन्हें बंधुआई से भी छुड़ाया था।

एक अकथनीय विनती इन शब्दों में अन्तर्निहित है। संभवतः नहेम्याह इस प्रकार कह रहा होगाः "हे प्रभु, अभी तक तूने अपने वचन का पालन किया है। तू अपने लोगों को वहाँ लौटा लाया जो तूने उनके लिए चुना था। हम, तेरे लोगों ने पाप किया है, लेकिन अब हम पश्चाताप करते हैं और तेरे पास लौट आते हैं। अब हम खतरे में हैं। यदि खतरे की इस घड़ी को नहीं सुधारा जाता है, तो तेरे लोगों के प्रति तेरा छुटकारा अधूरा रह जाएगा, क्योंकि तब हम उस देश में नहीं वास कर पाएंगे जिसे तूने अपने निवास के लिए चुन लिया है। हे प्रभु, कृपया ऐसा न होने दे।"

आयत 11. जब नहेम्याह ने अपनी प्रार्थना समाप्त की, तो उसने *राजा से सफलता के लिए निवेदन किया।* उसने फिर प्रार्थना की कि **प्रभु** उसकी **प्रार्थना** सुने (देखें 1:6)। वह केवल अपनी प्रार्थना के बारे में ही बात नहीं कर रहा था बल्कि अन्य लोगों की प्रार्थना, जिनकी पहचान **उन दासों की ... , जो तेरे नाम का भय मानना चाहते हैं**, की गई है, के बारे में भी चिंतित था। स्पष्ट रूप से, नहेम्याह के साथ, अन्य यहूदी लोग भी प्रार्थना कर रहे थे कि परमेश्वर उनकी दुर्दशा देखकर हस्तक्षेप करे और उनकी सहायता करे। नहेम्याह ने परमेश्वर से मांगा कि जब वह **आज उस पुरुष**, फारस के राजा के सम्मुख जाता है तो वह उसको सफलता प्रदान करे। राजा को "उस पुरुष" संबोधित करके नहेम्याह यह बताने का प्रयास कर रहा था कि राजा केवल एक मनुष्य था, जबकि परमेश्वर "स्वर्ग का परमेश्वर" था (1:5)। इसलिए, भविष्य में जो होने वाला था वह "उस पुरुष" पर निर्भर नहीं करता था, बल्कि यह प्रभु परमेश्वर पर निर्भर करता है। जबकि नहेम्याह परमेश्वर पर निर्भर था, उसके मन में एक योजना थी जिस पर वह काम करना चाहता था और उसने परमेश्वर से मांगा कि वह उसके इस प्रयास को सफल बनाए।

इस तथ्य के आधार पर कि नहेम्याह का हनानी के साथ राजा के सम्मुख उपस्थित होने में लगभग चार महीने बीत चुके थे तो इसकी रोशनी में यहाँ 2:1 में "आज" शब्द का प्रयोग कई प्रश्न खड़ा करता है। क्या नहेम्याह 1 में लिखी गई प्रार्थना, नहेम्याह का राजा का सामना करने से पहले केवल एक ही बार प्रार्थना की गई थी? क्या यह किसी प्रकार की प्रार्थना का सारांश है जिसे नहेम्याह ने उन दिनों में प्रार्थना की थी? इसकी संभावना है कि यह प्रार्थना चार महीने के दौरान नहेम्याह के प्रार्थना की भावना को अभिव्यक्त करती हो, लेकिन प्रार्थना के ये विशिष्ट शब्द नहेम्याह का राजा के सम्मुख उपस्थित होने से पहले, केवल एक ही बार उच्चारित किए गए होंगे।

नहेम्याह की उपाधि (1:11)

[11]हे प्रभु विनती यह है, कि तू अपने दास की प्रार्थना पर, और अपने उन दासों की प्रार्थना पर, जो तेरे नाम का भय मानना चाहते हैं, कान लगा, और आज अपने दास का काम सफल कर, और उस पुरुष को उस पर दयालु कर।" (मैं तो राजा का पियाऊ था।)

आयत 11. अपनी प्रार्थना का विवरण करने के पश्चात, यह विश्लेषण करते हुए कि नहेम्याह किस तरह फारसी सम्राट के सम्मुख उपस्थित हो सकता था, वह राजा के साथ अपने व्यवहार (और उसके तुरंत बाद होने वाले घटननाओं) का वृतांत बताता है। वह **राजा का पियाऊ था**। आधुनिक पाठक "पियाऊ" (מַשְׁקֶה, *माशक़ेह*) के कार्य करने वाले को तुच्छ घरेलू सेवक समझने की परीक्षा में गिर सकते हैं।[6] जबकि, पियाऊ एक बहुत महत्वपूर्ण उपाधि थी। उन दिनों राजा पर सदैव गुप्तघात का खतरा बना रहता था। राजा को जहर खुराने से बचाने के लिए, पियाऊ का कार्य राजा को परोसे जाने वाले दाखमधु का चुनाव करना, परोसना और यदि आवश्यकता हुई तो चखना भी पड़ता था। इसलिए पियाऊ, राजा के साथ सदैव रहने वाला एक भरोसेमंद साथी था। इस प्रकार के व्यक्ति का उसके विश्वासयोग्य सेवा के लिए सदैव सम्मान किया जाता था। इसलिए इसकी संभावना है कि यहूदा का अधिपति नियुक्त होने से पहले नहेम्याह एक उच्चाधिकारी था। ऐसा हो सकता है कि अपने लोगों की सेवा करने के लिए उसने अपने पद का त्याग किया होगा।

कुछ टीकाकारों ने एक यूनानी एड. का अनुसरण करते हुए "पियाऊ" का अनुवाद "नपुंसक" किया है और यह निष्कर्ष निकाला कि राजा के पियाऊ के रूप में नहेम्याह को नपुंसक होना चाहिए था, क्योंकि उसको रानी की उपस्थिति और रनिवास में भी रहना होता था।[7] उसका नपुंसक होने का विचार इस बात का विश्लेषण कर सकता है कि क्यों नहेम्याह ने "स्मरण रख" बार-बार कहा है (5:19; 13:14, 22, 31)। चूँकि वह संतानहीन था, तो जो कुछ उसने किया और जो उसने लिखा था, के द्वारा ही उसको स्मरण रखा जा सकता था। यद्यपि, जिस यूनानी एड. का ये टीकाकार अनुसरण करते हैं उसमें लिपिक त्रुटि प्रतिबिंब होती है और जिस प्रकार अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है, नहेम्याह "नपुंसक" (εὐνοῦχος, *यूनुखोस)* नहीं बल्कि "पियाऊ" (οἰνοχόος, *ओयनोखूस)* था। यह सुझाव कि नहेम्याह एक नपुंसक था "असंभव है, क्योंकि अण्डाकर्षण उसको यहूदी समुदाय का नेतृत्व करने के लिए अयोग्य ठहराता (व्यव. 23:1)।"[8]

अनुप्रयोग

प्रभावकारी नेतृत्वः क्षमता (अध्याय 1)

एक प्रभावकारी नेतृत्व का इसलिए सम्मान किया जाता है, क्योंकि उसने

अपनी सामान्य क्षमता विकसित कर ली है और अपने आपको समर्पित, भरोसेमंद और निष्ठावान सिद्ध कर लिया है। अर्तक्षत्र प्रथम ने जब नहेम्याह को अधिपति नियुक्त किया तो उसकी पहचान नेतृत्व क्षमता रखने वाला नेता के रूप में हुई और उसे यरूशलेम की शहरपनाह के पुनर्निर्माण की जिम्मेदारी सौंपी गई। यद्यपि, उसने “राजा का पियाऊ” के रूप में अपनी क्षमता पहले ही सिद्ध कर ली थी (1:11)। यह एक महत्वपूर्ण व प्रभावशाली पद था। उसको राजा के पास जाने की छूट थी[9] और पूर्णतया भरोसेमंद था। राजा का जीवन पियाऊ की कौशल व स्वामीभक्ति पर निर्भर रहता था। यदि वह स्वामीभक्त न होता तो राजा को (और राजा को कभी-कभी जहर भी दिया गया था) शत्रु द्वारा जहर दिया जा सकता था।

नहेम्याह को यह उपाधि कैसे प्राप्त हुई थी? पाठ इस विषय पर कुछ भी नहीं बताता है। हम जानते हैं कि इससे पहले अन्य यहूदी - विशेषकर दानिय्येल, दानिय्येल के तीन मित्र (दानिय्येल 1:19), और मोर्दकै (एस्तेर 8:2) - ने बाबुल और/या फारस की सरकार में अधिकार व प्रभावशाली उपाधि प्राप्त कर लिया था। हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि नहेम्याह का संबंध बाबुल की एक प्रभावशाली व धनाढ्य परिवार से था (देखें 5:14-19)।[10] संभवतः विद्यालय या व्यवसाय में उसकी क्षमता ने राजा या राजा के सलाहकारों का ध्यान आकर्षित किया होगा। जो भी कार्य उसने किया था, उसमें उसने अपनी कार्यक्षमता व विश्वासयोग्यता को दिखाया होगा। केवल इस प्रकार की क्षमता प्रदर्शित करने वाले को ही राजा का पियाऊ नियुक्त किया जा सकता था। इस भूमिका में अपनी सेवा जारी रखने के लिए, उसका सेवा कार्य उत्कृष्ट होना चाहिए था।

राजा ने स्वयं इस बात का संज्ञान लिया कि किस प्रकार पहली बार नहेम्याह ने अपने आपको राजा के सम्मुख प्रस्तुत किया था कि उसका पियाऊ उसके सम्मुख दुःखी खड़ा था (2:2)। स्पष्ट रूप से, पियाऊ का एक कार्य अपने साथी को उत्साहित रखना था और नहेम्याह ने इस कार्य को ऐसे ही पूरा किया था।

आधुनिक कलीसिया में, क्षमतावान लोगों को परमेश्वर के लोगों का अगुवा होना चाहिए। परमेश्वर द्वारा पौलुस का चुनाव यह विश्लेषण करता है कि परमेश्वर के लोगों की अगुवाई करने के लिए क्षमतावान लोगों की आवश्यकता है। मसीही अगुवा होने के लिए, “क्षमतावान” व्यक्ति होने की आवश्यकता (1 कुरिं. 6:5; NJB), एक प्राचीन का “बाहरवालों में भी सुनाम होने” की आवश्यकता भी प्रतिबिंब होता है (1 तीमु. 3:7)। उसी तरह, एक प्रचारक का “विश्वासियों के लिये आदर्श” (1 तीमु. 4:12) बनना आवश्यक है।

आज जो अगुवा बनने की अभिलाषा करता है उसको सबसे पहले स्वयं की “चौकसी करना” अनिवार्य है (प्रेरितों. 20:28)। अन्य लोगों में उसकी पहचान एक विश्वासयोग्य एवं भरोसेमंद व्यक्ति के रूप में होनी चाहिए। उसको अपने आपको विकसित करने का प्रयास करना चाहिए और अपने गुणों का प्रयोग करना चाहिए, अवसर का लाभ उठाना चाहिए, और जो भी वह करता है उस पर सफलता प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। एक उभरते हुए अगुवे को एक पुरानी कहावत “यदि कोई कार्य करने के योग्य है, तो उसे करना चाहिए” स्मरण रखना चाहिए।

होने वाले कलीसिया के अगुवे के लिए, “क्षमतावान व्यक्ति” का अर्थ एक विश्वासयोग्य मसीही है जो अपनी आत्मिक ऊँचाई की चरम सीमा पर पहुँचने का हर संभव प्रयास करता है।

निःसंदेह, जिस संदर्भ में हम इस शब्द का प्रयोग कर रहे हैं, उस संदर्भ में हर कोई अगुवा नहीं बन सकता है। हर किसी को अगुवा होने का गुण प्राप्त नहीं है। कलीसिया में हर प्रकार के लोगों के लिए स्थान है। मसीही होने के नाते, हम सबको एक जैसा होने की आवश्यकता नहीं है। हमारी अलग-अलग पृष्ठभूमि व व्यक्तित्व है।

यद्यपि, सभी मसीहियों में कुछ बातें सामान्य होती हैं। हम सबको परमेश्वर ने वरदान दिए हैं और हमसे यह अपेक्षा की जाती है कि हम उन वरदानों का प्रयोग परमेश्वर की महिमा के लिए व मानवजाति की सेवा में करें। जितना हो सके उतना भला बनें - सबसे क्षमतावान व प्रभावशाली व्यक्ति विशेष बनें - जैसा यीशु चाहता है वैसे ही हम बनते जाएं।

प्रार्थना में धैर्य धरना (1:4)

चार महीने तक नहेम्याह विलाप व प्रार्थना करता रहा। जब उसने “किसलेव के महीने” (1:1) में, (जो कि नौवाँ महीना है), यरूशलेम की दुर्दशा के बारे में सुना, तब से लेकर नीसान के महीने तक, (जो कि पहला महीना है), उसकी स्थिति ऐसी ही बनी रही। तब उसने राजा से आग्रह किया, कि क्या यह संभव है कि वह यरूशलेम लौटकर यहूदियों को शहरपनाह का पुनर्निर्माण में अगुवाई कर सकता है (2:1)। प्रार्थना में उसके धैर्य का अच्छा परिणाम निकला; फारस के राजा ने उसको यरूशलेम लौटकर शहरपनाह का पुनर्निर्माण करने की अनुमति दे दिया।

यीशु ने प्रार्थना में निरंतर लगे रहने की आवश्यकता के बारे में सिखाया (लूका 18:1-8)। क्या हम निरंतर प्रार्थना करते हैं (देखें रोमियों 12:12; 1 थिस्स. 5:17), या क्या हम अपनी आवश्यकता के बारे में परमेश्वर से एक बार मांगकर संतुष्ट हो जाते हैं? यीशु ने सारी रात प्रार्थना की (लूका 6:12)। क्या कभी हमने ऐसा किया है?

प्रेम क्या करता है (1:5)

परमेश्वर सबको आशीष देता है। सभी लोग उसके प्रति अपनी आभार व्यक्त करने व सेवा के लिए बाध्य हैं क्योंकि वह सबको जीवन की भली-भली वस्तुएं प्रदान करता है। पौलुस ने कहा, “क्योंकि वह स्वयं ही सब को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है” (प्रेरितों. 17:25)।

तथापि, परमेश्वर कुछ लोगों को विशिष्ट रीति से आशीषित करता है। जैसे नहेम्याह ने कहा, “जो उससे प्रेम रखते हैं और उसकी आज्ञा मानते हैं” उनको वह आशीष देता है (1:5)। परमेश्वर के उद्धार का आशीष उन लोगों तक सीमित है जो उससे प्रेम करते हैं और उसकी आज्ञा मानते हैं। यह बात मसीही युग में भी सत्य

है। जबकि परमेश्वर ने जगत को बचाने के लिए "अपना एकलौता पुत्र दे दिया," तो केवल वे जो उस पर विश्वास करते हैं और सुसमाचार का अनुकरण करते हैं, यीशु का छुटकारा देने वाले बलिदान के द्वारा बचाए जाएंगे (यूहन्ना 3:16, 17)।

परमेश्वर की विशेष प्रतिज्ञा उन लोगों के लिए है जो "उसकी आज्ञा का पालन करते हैं।" कुछ लोगों के लिए यह विश्वास करना आसान जान पड़ता है कि परमेश्वर को प्रेम करना अनिवार्य है, चूँकि यीशु ने कहा कि इस प्रकार का प्रेम सबसे बड़ी आज्ञा है (मत्ती 22:37, 38), लेकिन यह विचारधारा स्वीकार करते हुए उन्हें कठिन लगता है कि आज्ञा मानना महत्वपूर्ण है। परमेश्वर से सदैव प्रेम करने में उसकी आज्ञा मानना निहित है। व्यवस्थाविवरण की पुस्तक, जिसमें "महानतम् आज्ञा" पाई जाती है (व्यवस्थाविवरण 6:5), आज्ञा मानने की आवश्यकता पर जोर देता है। पुराने नियम की पुस्तकों में परमेश्वर की आज्ञा मानने का पुरजोर आह्वान व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में ही पाया जाता है (उदाहरण के लिए देखें, व्यवस्थाविवरण 10:12, 13)। उसी तरह यीशु ने कहा, "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे" (यूहन्ना 14:15; देखें यूहन्ना 15:14)। आज सब लोगों के लिए उसकी यह आज्ञा है कि सबको पश्चाताप करना है (प्रेरितों. 17:30; 26:20) और सुसमाचार का अनुकरण करना है, मसीह को परमेश्वर का पुत्र अंगीकार करना है (रोमियों 10:9, 10) और पाप क्षमा हेतु बपतिस्मा लेना है (प्रेरितों. 2:38; 22:16)।

क्या आप परमेश्वर से आशीष पाना चाहते हैं? तब आपको उससे प्रेम करना होगा! इससे बढ़कर, परमेश्वर के प्रति आपके प्रेम का प्रगटीकरण यीशु मसीह का अनुकरण द्वारा प्रगट होना चाहिए!

समाप्ति नोट्स

[1]एडविन एम. यामोची, "एज्रा-नहेम्याह," में *दि एक्सपोजीटर्स बाइबल कमेंट्री,* वॉल्. 4, *1 राजा-अय्यूब*, सम्पादक फ्रैंक ई. गैबलीन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1988), 680. [2]देखें कार्ल एडविन एमेरडिंग और रोलैण्ड के. हैरीसन, "नहेम्याह," में *दि इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल एनसाइक्लोपीडीया*, संशोधित एड., सम्पादक ज्योफरी डब्ल्यु. ब्रौमिली (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1986), 3:513. [3]शूशनगढ़ में इन लोगों का आगमन् यह बताता है कि बाबूल की बन्धुआई के बाद यहूदा और फारस के बीच यात्रा असामान्य नहीं था। [4]लेस्ली सी. ऐलेन और तीमोथी एस. लानियेक, *एज्रा, नहेम्याह, एस्तेर*, न्यू इंटरनेशनल बिब्लिकल कमेंट्री (पीबॉडी, मासाचुसेट्सः हेंड्रीक्शन पब्लिशर्स, 2003), 91. एस्तेर की कहानी में भी शूशन समायोजन का कार्य करता है (देखें एस्तेर 1:2)। [5]कीथ एन. शोविल, *एज्रा-नहेम्याह*, कॉलेज प्रेस NIV कमेंट्री (जॉप्लीन, मिसौरीः कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग कम्पनी, 2001), 139. [6]यूसुफ की कहानी में KJV में इसी शब्द का प्रयोग "पकानेहारे" के लिए किया गया है (उत्पत्ति 40:1, 2)। [7]जेकब एम. मेयर्स, *एज्रा, नहेम्याह*, दि एंकर बाइबल, वॉल्. 14 (गार्डन सीटी, न्यू यॉर्कः डबलडे & कम्पनी, 1965), 96. [8]सोविल, 144. [9]एस्तेर की पुस्तक राजा के सम्मुख उपस्थित होने की कठिनाइयों का विश्लेषण करता है (एस्तेर 4:1-5:4)। [10]यद्यपि बाबुल में यहूदी लोगों को बंधुआ बनाकर ले जाया गया था, लेकिन उन में से बहुत सारे लोग संपन्न हो गए थे।